**ओ३म्**

**‘मकर संक्रान्ति पर्व के महत्व को जानकर श्रद्धापूर्वक मनायें’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

 मकर संक्रान्ति का पर्व प्रत्येक वर्ष 14 जनवरी को देश भर में मनाया जाता है। आजकल लोग पर्व तो मनाते हैं परन्तु बहुत से बन्धुओं को पर्व का महत्व व उससे जुड़ी हुई घटनाओं का ज्ञान नहीं होता। अतः यह आवश्यक है कि पर्व के सभी पक्षों को संक्षेप से जान लिया जाये। इस पर्व का पहला महत्व हमारे सौर मण्डल तथा मकर राशि से है। हम जानते हैं कि पृथिवी में दो प्रकार की गतियां होती हैं। एक तो यह अपने अक्ष परघूमती है। दूसरी गति इसके द्वारा सूर्य की परिक्रमा की जाती है जो एक वर्ष में पूरी होती है। एक परिक्रमा के काल वा समय को सौर वर्ष कहते हैं। पृथिवी का सूर्य की परिक्रमा का जो पथ होता है वह कुछ लम्बा वर्तुलाकार होता है। मकर संक्रान्ति के दिन से चल कर पुनः उसी स्थान पर आने वा सूर्य का एक पूरा चक्र करने के मार्ग व परिधि को **‘‘क्रान्तिवृत्त”** कहते हैं। हमारे ज्योतिषियों द्वारा इस क्रान्तिवृत्त के 12 भाग कल्पित किए हुए हैं और उन 12 भागों के नाम उन-उन स्थानों पर आकाश के नक्षत्र पुंजों से मिलकर बनी हुई कुछ मिलती जुलती आकृति वाले पदार्थों के नाम पर रख लिये गए हैं। यह बारह नाम हैं, मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन। क्रान्तिवृत पर कल्पित प्रत्येक भाग व नक्षत्रपुंजों की आकृति **“राशि”** कहलाती है। पृथिवी जब एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश व संक्रमण करती है तो इस संक्रमण को ही **“संक्रान्ति”** कहा जाता है। लोकाचार में पृथिवी के संक्रमण को सूर्य का संक्रमण कहने लगे हैं। मकर संक्रान्ति का अर्थ हुआ कि सूर्य मकर संक्रान्ति के दिन मकर राशि में प्रवेश करता है। 6 महीनों तक सूर्य क्रान्तिवृत से उत्तर की ओर उदय होता है और 6 मास तक दक्षिण की ओर से निकलता रहता है। इन 6 मासों की अवधि का नाम **‘अयन’** है। सूर्य के उत्तर की ओर से उदय की 6 मास की अवधि का नाम **‘उत्तरायण’** और दक्षिण की ओर से उदय की अवधि को **‘दक्षिणायन’** कहते हैं। उत्तरायण काल में सूर्य उत्तर की ओर से उदय होता हुआ दीखता है और उस में दिन का काल बढ़ता जाता है तथा इस अवधि में दिन के बढ़ने से रात्रि का काल कम होने से रात्रि घटती है, इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया जाता है। दक्षिणायन में सूर्योदय क्रान्तिवृत्त के दक्षिण की ओर से उदय होता हुआ दृष्टिगोचर होता है और उसमें दिन की अवधि घटती है तथा रात्रि की अवधि में वृद्धि होती है। सूर्य जब मकर राशि में प्रवेश करता वा संक्रान्त होता है तो इसको उत्तरायण का आरम्भ होना तथा कर्क राशि में प्रवेश से दक्षिणायन का आरम्भ होना माना जाता है जिन दोनों अयनों की अवधि 6 माह होती है। उत्तरायण में दिन बढ़ने व रात्रि छोटी होने से पृथिवी पर प्रकाश की अधिकता होती है, इस कारण इस उत्तरायण का महत्व दक्षिणायन से अधिक माना जाता है। उत्तरायण के महत्व का आरम्भ मकर संक्रान्ति से होने के कारण मकर संक्रान्ति (14 जनवरी) के दिवस को अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है और इस दिन को पर्व के रूप में मनायें जाने की प्रथा है। यह भी जानकारी दे दें कि ज्योतिष के आचार्य बतातें हैं कि उत्तरायण का आरम्भ मकर संकान्ति के दिन से पहले हो जाता है परन्तु मकर संक्रान्ति पर्व पर ही दोनों पर्व एक साथ मनाये जाने की परम्परा चली आ रही है। भविष्य में इन्हें अलग अलग तिथियों पर मनायें जाने पर विचार भी किया जा सकता है। जो भी हो इस पर्व को मनायें जाने का मुख्य उद्देश्य मकर संक्रान्ति का ज्ञान कराने सहित 6 माह की अवधि वाले उत्तरायण के आरम्भ से है जिससे लोग हमारे पूर्वजों के ज्योतिष विषयक ज्ञान व रुचि से परिचित हो सकें।

 मकर संक्रान्ति पर्व मनायें जाने का दूसरा आधार व कारण इसका शीत ऋतु में आना है। मकर-संक्रान्ति के दिन 14 जनवरी को शीत अपने यौवन पर होती है। इस दिन मनुष्यों के आवास, वन, पर्वत सर्वत्र शीत का आतंक सा रहता है। चराचर जगत् शीत ऋ़तु का लोहा मानता है। मनुष्य व वन्य आदि प्राणियों के हाथ पैर जाड़े से सिकुड़ जाते हैं। शरीर ठिळुरन से त्रस्त रहता है। बहुत से वृद्ध शीत की अधिकता से मृत्यु को प्राप्त होते हैं। हृदय रोगियों के लिए भी शीत ़ऋतु कष्ट साध्य होती है ।इन दिनों सूर्योदय से दिन का आरम्भ होता है परन्तु सूर्य शीघ्र ही अस्त हो जाता है अर्थात् सूर्योदय और उसके अस्त होने के बीच कम समय होता जबकि लोग अधिक समय तक सूर्य के प्रकाश व उष्णता की अपेक्षा करते हैं। मकर संक्रान्ति से पूर्व रात्रि की अवधि अधिक होती है जिससे लोगों में क्लेश रहता है परन्तु मकर संक्रान्ति के दिन से रात्रि का समय बढ़ने और दिन का घटने का क्रम बन्द हो जाता है। ऐसा प्रतीत होता है मकर संक्रान्ति के मकर ने उस लम्बी रात्रि को निगलना आरम्भ कर दिया है। इस दिन सूर्य देव उत्तरायण में प्रवेश करते हैं। मकर संक्रान्ति की महिमा संस्कृत साहित्य में वेद से लेकर आधुनिक ग्रन्थों पर्यन्त विशेष रूप से वर्णन की गई है। वैदिक ग्रन्थों में उत्तरायण को **‘देवयान’** कहा जाता है और ज्ञानी लोग अपने शरीर त्याग तक की अभिलाषा इसी उत्तरायण वा देवयान में रखते हैं। उनका मानना होता है कि उत्तरायण में देह त्यागने से उन की आत्मा सूर्य लोक में होकर प्रकाश मार्ग से प्रयाण करेगी। आजीवन ब्रह्मचारी भीष्म पितामह ने इसी उत्तरायण के आगमन तक शर-शय्या पर शयन करते हुए देहत्याग वा प्राणोत्क्रमण की प्रतीक्षा की थी। मकर संक्रान्ति के ऐसे प्रशस्त महत्व वा समय को पर्व बनने से वंचित नहीं रखा जा सकता। आर्य पर्व पद्धति के लेखक पं. भवानी प्रसाद जी ने लिखा है कि आर्य जाति के प्राचीन नेताओं ने मकर-संक्रान्ति (सूर्य की उत्तरायण संक्रमण तिथि) को पर्व निर्धारित कर दिया।

 मकर संक्रान्ति का पर्व चिरकाल से मनाया जाता है। यह पर्व प्रायः भारत के सभी प्रान्तों में प्रचलित है। सर्वत्र इस पर्व पर शीत के प्रभाव को दूर करने के उपाय किये जाते दिखाई देते हैं। वैद्यक शास्त्र ने शीत के प्रतीकार के लिए तिल, तेल, तूल (रूई) का प्रयोग बताया है। तिल इन तीनों में मुख्य हैं। पुराणों में तिल के महत्व के कारण कुछ अतिश्योक्ति कर इसे पापनाशक तक कह दिया गया। किसी पुराण का प्रसिद्ध श्लोक है **‘तिलस्नायी तिलोद्वर्ती तिलहोमो तिलोदकी। तिलभुक् तिलदाता च षट्तिला पापनाशनाः।।’** अर्थात् तिल-मिश्रित जल से स्नान, तिल का उबटन, तिल का हवन, तिल का जल, तिल का भोजन और तिल का दान ये छः तिल के प्रयोग पापनाशक हैं। मकर संक्रान्ति के दिन भारत के सब प्रान्तों में तिल और गुड़ के लड्डू बनाकर दान किये जाते हैं और इष्ट मित्रों में बांटे जाते हैं। तिल को कूट कर उसमें खांड मिलाकर भी खाते हैं। यह एक प्रकार से मिष्ठान्न की भांति रुचिकर होता है। महाराष्ट्र में इस दिन तिलों का **‘तिलगूल’** नामक हलवा बांटने की प्रथा है और सौभाग्यवती स्त्रियां तथा कन्याएं अपनी सखी-सहेलियों से मिलकर उन को हल्दी, रोली, तिल और गुड़ भेंट करती हैं। यह पर्व प्राचीन भारत की संस्कृति का दिग्दर्शन कराता है जिसका प्रचलन स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर भी किया गया है। आज के समय में जो मिष्ठान्न हैं वह प्रायः स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध हो रहे हैं। यह भी कहा जाता है कि प्राचीन ग्रीक लोग भी वधू-वर को सन्तान वृद्धि के निमित्त तिलों का पक्वान्न बांटते थे। इससे ज्ञात होता है कि तिलों का प्रयोग प्राचीनकाल में विशेष गुणकारक माना जाता रहा है। प्राचीन रोमन लोगों में मकर संक्रान्ति के दिन अंजीर, खजूर और शहद अपने इष्ट मित्रों को भेंट देने की रीति थी। यह भी मकर संक्रान्ति पर्व की सार्वत्रिकता और प्राचीनता का परिचायक है।

 अतः मकर संक्रान्ति का पर्व अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। इसे मनाते समय इससे जुड़ी उपर्युक्त सभी बातों को ध्यान में रखना चाहिये। ऐसा कर हम स्वयं भी इनसे परिचित रहेंगे और हमारी भावी पीढ़ियां भी इन्हें जानकर उसे अपनी आगामी पीढ़ियों को जना सकेंगी। इस दिन यज्ञ करने का भी विधान किया गया है। यज्ञ करने से वातावरण दुर्गन्धमुक्त होकर सर्वत्र सुगन्ध का प्रसार करने वाला होता है। यज्ञ स्वास्थ्य के लिए तो यह लाभप्रद होता ही है इसके साथ ही इससे ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना भी सम्पन्न होती है। यज्ञ के गोघृत व अन्न-वनस्पतियों की आहुतियों का सूक्ष्म भाग वायुमण्डल को हमारे व दूसरे सभी के लिए सुख प्रदान करने में सहायक होता है। आर्यपर्व पद्धति में यज्ञ करते हुए हेमन्त और शिशिर ऋतुओं की वर्णनपरक ऋचाओं से विशेष आहुतियों का विधान किया गया है जिससे यज्ञकर्ता व गृहस्थी उनसे परिचित हो सकें। भारत की प्राचीन वैदिक धर्म व संस्कृति विश्व के सभी मनुष्यों के पूर्वजों की धर्म व संस्कृति रही है। इसका संरक्षण और प्रसार सभी मनष्ुयों का पावन कर्तव्य है। हमें प्रत्येक कार्य करते हुए यह भी ध्यान रखना चाहिये कि मनुष्य जीवन का उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति करना है। हम ऐसा कोई कार्य न करें जिससे इन उद्देश्यों की पूर्ति में बाधा हो और ऐसा कोई काम करना न छोड़े जो इन उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक हो सकते हैं। मकर संक्रान्ति पर्व की शुभकामनाओं सहित। ओ३्म शम।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**‘नदियों में स्नान का धार्मिक औचीत्य और महर्षि दयानन्द’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

आज एक आर्य मित्र से प्रातः गंगा स्नान की चर्चा चली तो हमने इस पर उनके साथ विचार किया और हमारे मन में जो जो विचार आये उसे अपने मित्रों से साझा करने का विचार भी आया। हमारी धर्म व संस्कृति संसार के सभी मतों व पन्थों में सबसे प्राचीन व वैज्ञानिक है। प्राचीन काल में परमात्मा ने मनुष्यों को कर्तव्यों व अकर्तव्यों का ज्ञान कराने के लिए चार आदि ऋषियों को चार वेदों का ज्ञान दिया था। चारों वेद ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तकें हैं जिसमें सभी सत्य विद्याओं का बीज रूप में प्रकाश है। वेदों में असत्य व मिथ्या कुछ भी नहीं है। यह बात महर्षि दयानन्द की मान्यताओं, सिद्धान्तों, उनके वेद भाष्य एवं सभी ग्रन्थों से प्रमाणित होती है।

यह स्वभाविक है कि जब सृष्टि का प्रचलन हुआ तो मनुष्य वनों व गांवों में रहते थे और उन्होंने प्रथम अपने लिए जो आवास बनायें होंगे, वह गांव की झोपड़ियों के रूप में ही रहे होंगे। उनका उद्देश्य तो यही रहा होगा कि उनकी वर्षा व धूप अर्थात् गर्मी आदि से रक्षा हो और उनकी प्राइवेसी बाधित न हो। आरम्भ में स्नान, शौच, स्नान व वस्त्र प्रक्षालन सहित अपने भोजन आदि पकाने के लिए नदियों व सरोवरों के जल पर ही निर्भर रहना होता रहा होगा। विचार करने पर यही तथ्य सामने आता है कि सभी मानव बस्तियां नदियों के किनारे बसाई जाती रही होंगी जिससे जीवन निर्वाह में आवश्यक जल की आपूर्ति अबाध रूप से होती रहे। वर्षों व लम्बे समय तक यही व्यवस्था चली होगी। समय के साथ मनुष्य ने पर्यटन कर अन्य सुरम्य व उपयोगी स्थानों को ढूंढा होगा और तब नदियों से दूर इन स्थानों पर जल की पूर्ति के लिए कुंओं व जलाशयों का निर्माण किया होगा जो अधिक कठिन नहीं था और न इसमें किसी विशेष तकनीकि की आवश्यकता ही थी। जब मनुष्य दूर हुए होंगे तो हमारे समाज के विद्वान ऋषियों व मनीषियों, जो तब ब्राह्मणों के नाम से जाने जाते थे, उन्होंने अपने अध्ययन व अध्यापन के लिए आश्रम भी बनायें होंगे और उनके लिए उपयुक्त शान्त वातावरण की खोज के लिए उन्हें वनों व पर्वतों में नदियों के सुरम्य तट ही अधिक आकर्षक, प्रासंगिक व उपयोगी लगे होंगे। इस प्रकार नदियों के किनारे, वनों व पर्वतों पर हमारे ऋषियों आदि के अनेक आश्रमों व गुरुकुलों का निर्माण हुआ होगा। ऐसे स्थानों पर हमारे गृहस्थी भी अपनी सन्तानों को शिक्षा व अध्ययन हेतु प्रविष्ट कराने के साथ ऋषियों व विद्वानों के उपदेश श्रवण करने समय समय पर आते रहे होंगे। वर्षा काल में कृषि कार्यों से अवकाश रहता है अतः ऐसे समय में दूर दूर से हमारे गृहस्थी ऋषियों व मुनियों के चरणों में वन, पर्वतों पर नदियों के तट पर स्थित आश्रमों में आते थे। इस प्रकार से हमारा वैदिक धर्म, संस्कृति व परम्परायें आगे बढ़ते रहे और आज से पांच हजार वर्ष पूर्व महाभारत काल का समय आ गया जब भीषण युद्ध हुआ जिसमें जान व माल की भारी क्षति हुई।

 महाभारत युद्ध के बाद भारत पतन के मार्ग पर अग्रसर हुआ और ऐसा समय आ गया जब वेदों के गिने चुने विद्वान ही रह गये। अज्ञानी व अल्पज्ञानी लोगों की मनमानी समाज में चलने लगी जिन्होंने यज्ञों में हिंसा सहित अपनी अज्ञानता से नई नई मिथ्या परम्परायें स्थापित कीं। यज्ञों में हिंसा के विरुद्ध बौद्ध व जैन मतों का प्रादुर्भाव हुआ परन्तु इनसे भी अज्ञान व अविद्या में कमी नहीं आई। स्वामी शंकराचार्य जी ने इन नास्तिक मतों को शास्त्रार्थ में परास्त कर वैदिक मत को पुनः प्रचलित किया परन्तु वेदोद्धार और वैदिक परम्पराओं का प्रचलन न होकर अज्ञान व अन्धविश्वास ही देश में प्रचलित रहे। इसके बाद 18 पुराणों का शनैः शनैः निर्माण व प्रचलन हुआ जिससे देश भर में ईश्वर व जीवात्मा तथा ईश्वर की उपासना के नाम पर पाषाण व जड़ मूर्ति पूजा सहित अतवारवाद, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, बेमेल व बाल विवाह, सामाजिक भेदभाव व छुआछूत, अशिक्षा आदि का प्रचलन हुआ। ऐसे अज्ञानता के काल में ही गंगा आदि नदियों को तीर्थ मानकर वहां विभिन्न तिथियों पर जाकर स्नान करने की महिमा का मण्डन किया गया। सामान्य अज्ञानी व्यक्तियों ने इन सब व्यवस्थाओं व विधानों को आंख बन्द कर स्वीकार किया जिससे समाज का घोर पतन हुआ। इस पतन के परिणामस्वरूप देश विधर्मियों का पराधीन हो गया और ऋषि सन्तानों को पराधीनता के असीम दुःखों से भरे दिन देखने पड़े। सोमनाथ, विश्वनाथ, कृष्ण जन्मभूमि, रामजन्म भूमि आदि बड़े बड़े मन्दिरों को तोड़ा व लूटा गया, मारकाट की गई, स्त्रियों को अपमानित किया गया और देश का असीम खजाना विदेशी व विधर्मी लूट लूट कर ले गये। इतना होने पर भी हमारे समाज के विद्वानों व तथाकथित ब्राह्मणों की आंखे नहीं खुलीं। अज्ञानता व अंधविश्वासों से छुड़ाने के लिए कोई विद्वान पुरुष, सन्त व महात्मा आगे नहीं आये। ऐसा होते होते सन् 1825 व 1863 के वर्ष आये जो भारत के इतिहास में विशेष महत्व रखते हैं।

सन् 1825 में भारत के गुर्जर प्रदेश के टंकारा कस्बे में पं. करषन तिवाड़ी जी के घर बालक मूल शंकर का जन्म हुआ जो बाद में देशाटन, योगाभ्यास व ऋषि तुल्य वैदिक विद्वान स्वामी विरजानन्द सरस्वती से मथुरा में संस्कृत व्याकरण की अष्टाध्यायी-महाभाष्य व निरुक्त पद्धति से अध्ययन कर सन् 1863 वेदों के विद्वान बनें तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध हुए। स्वामी विरजानन्द जी की प्रेरणा से स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन का उद्देश्य अज्ञान, अन्धविश्वास व कुरीतियों को मिटाकर वैदिक परम्पराओं व सिद्धान्तों की स्थापना को बनाया। इसी दिन से महाभारत काल के बाद भारत में नये युग का सूत्रपात हुआ जिसका परिणाम आज का शिक्षित समाज और सन् 1947 में देश की आजादी है। यदि देशवासियों ने ऋषि दयानन्द की पूरी बात मान ली होती तो देश का विभाजन न होता और न आज आतंकवाद, सामाजिक भेदभाव व छुआछूत जैसी समस्याओं ही होतीं। सभी सुशिक्षित होते एवं एक सत्य मत का पालन करने वाले होते जिससे देश व विश्व में सुख व शान्ति का वातावरण होता।

 बौद्ध व जैन मत की स्थापना के बाद के काल को मध्यकाल के नाम से जाना जाता है जब कि भारत वर्ष में वेद विद्या का सूर्य अस्त होकर संसार में अन्धकार छा गया था। ऐसे समय में ही नदियों में स्नान को महिमा मंडित किया गया। नदियों को तीर्थ बनाने व माने जाने का एक कारण यह भी हो सकता है कि नदियों के तटों पर ही हमारे अनेक ऋषि, मुनि व विद्वानों के आश्रम तथा गुरुकुल आदि होते थे। यहां देश की जनता ऋषि-मुूनियों के उपदेश श्रवण द्वारा मार्ग दर्शन के लिए आती थी। सच्चा तीर्थ भी महात्माओं व विद्वानों आदि की शरण में जाकर सत्य उपदेश ग्रहण करने को ही कहते हैं। माता-पिता व आचार्यों की तन-मन व धन से सेवा भी तीर्थ कहलाती है। अतः मध्यकाल वा अविद्याकाल के दिनों में नदियों के तटों पर स्थित आश्रमों में ज्ञानी ऋषियों का अभाव होने पर यहां श्रद्धालु जनों ने आकर यहां की नदियों में स्नान करने को ही तीर्थ मान लिया। पुराण नाम से नवीन ग्रन्थों की कुछ लोगों ने रचना कर नदियों में स्नान को ही तीर्थ का नाम देकर वेद विरुद्ध मिथ्या मान्यतायें प्रचलित कर दीं। पुराणों को तत्कालीन अविवेकी समाज की मान्यता मिलने के कारण लोगों ने इन्हें वेद के समान मान कर इस पर आचरण करना आरम्भ कर दिया जो आज तक चला आया है।

आज कोई श्रद्धालु सोचने की भी आवश्यकता नहीं समझता कि गंगा में नहाने से पांप दूर होते हैं या नहीं, होते हैं तो कैसे, पुण्य होता है व पाप, इससे समाज को लाभ होता है या हानि? ऐसे अनेक प्रश्न हैं जिन पर विचार करने पर जो प्रचलित बातें हैं, उनके विपरीत उत्तर मिलता है। विज्ञान मानता है कि जल कहीं भी हो, वर्षा का हो या किसी नदी अथवा समुद्र का अथवा बर्फ के पिघलने से उत्पन्न जल, हाईड्रोजन और आक्सीजन के संयोग से बनता व बना हुआ है। सभी नदियों का जल एक समान ही होता है। आजकल तो गंगा आदि नदियों के जल में प्रदुषण का स्तर इस कदर बढ़ गया है कि वह आचमन करने योग्य भी नहीं है। गंगा नदी व अन्य सभी नदियों का महत्व इस कारण से है कि इनसे हमारे देश की कृषि भूमि की सिंचाई होकर इससे हमें अन्न, फल व तरकारियों मिलती हैं। वनस्पतियां लहलहाती हैं जिस पर हमारा जीवन आश्रित है। यह महत्व नदियों में स्नान से प्राप्त होने वाले लाभों से कहीं अधिक है। यह जानना, समझना व मानना चाहिये कि नदियों का जल केवल स्नान किये ही नहीं अपितु यह गुणकारी अन्न व फलों आदि के लिए भी है। इस दृष्टि से हमें अपनी जीवन शैली में बदलाव करना चाहिये जिससे सभी नदियों के जल का प्रदुषण समाप्त हो। आज देश में जो आर्थिक व सामाजिक सुधार हो रहे हैं उससे अनुमान है कि आने वाले समय में देश की नदियों के प्रति हमारे दृष्टिकोण में परिवर्तन आयेगा और हम नदियों के प्रति सजग होकर न तो स्वयं प्रदुषण करेंगे और न अन्य किसी को करने देंगे।

 आज आवश्यकता इस बात की भी है कि हम मध्यकालीन परम्पराओं को आंखें बन्द कर स्वीकार न करें अपितु वैदिक ज्ञान व अपने विवेक के अनुसार विचार कर अच्छी परम्पराओं को जारी रखते हुए अलाभकारी व समाज को कमजोर करने वाली सभी प्रथाओं को समाप्त कर दें। इसके लिए महर्षि दयानन्द का ग्रन्थ **‘सत्यार्थ प्रकाश’** सहयोगी हो सकता है। इसके अन्त के चार अध्याय संसार के सभी लोगों के लिए अज्ञानता व अन्धविश्वास दूर करने में सहयोगी एवं मार्गदर्शक हो सकते हैं। यह मानकर चलना चाहिये कि जिसकी अधिक आलोचना व उपेक्षा की जाती है, कई बार वही सत्य व लाभकारी होता है। सत्यार्थप्रकाश की सभी मान्यतायें सत्य हैं। इसको अपनाने से कुछ लोगों के स्वार्थों की हानि हो सकती है, इसी लिए इनका विरोध किया जाता है। आज भारत सरकार द्वारा नोटबन्दी के बाद भी ऐसा ही देखा जा रहा है। आम समझदार व्यक्ति इससे प्रसन्न है। इसमें देश का व निर्धनों का दूरगामी हित छिपा हुआ है। लोगों को नगदी की कमी के कारण कुछ कष्ट अवश्य हो रहें हैं, जो बड़े बदलाव के लिए जरुरी हैं। इसके साथ ही हम कुछ लोगों को इस जनकल्याणकारी कार्य का विरोध करते हुए भी देख रहे हैं। जनता इसके विरोध में निहित भावनाओं को भली प्रकार समझती हैं। ऐसा ही विरोध अज्ञानता, अन्धविश्वास व कुरीतियों को दूर कराने के समय ऋषि दयानन्द के साथ हुआ था। यहां तक कि उनको विष देकर मार डाला गया। इस पर भी ऋषि दयानन्द के अनुयायी समाज सुधार व देश को सुदृण करने के कार्य में डटे रहे तथा आज भी डटे हुए हैं।

अच्छे विचारों व कार्यों का परिणाम अच्छा ही होता है। आर्यसमाज के प्रचार का परिणाम भी देश व विश्व के इतिहास में अच्छा ही होगा। देश व विश्व की भावी पीढ़िया ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के अनुयायियों एवं प्रचारकों के समाज हितकारी सभी कार्यों का अवश्य ही धन्यवाद व प्रसंशा करेंगी। अविद्या, अज्ञान, अन्धविश्वास, कुरीतियां, सामाजिक भेदभाव के दूर होने से ही समाज सुदृण एवं समुन्नत होता है। नदियों वा गंगा स्नान के महत्व पर स्वविवेक से विचार कर हम सभी विषयों में सकारात्मक वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपना कर अपना व समाज का हित कर सकते हैं। दूरगामी दृष्टि से सत्य ही विजयी व सफल होता है और असत्य व अज्ञान पराजित होते हैं। वेदों के प्रचार व आर्यसमाज का भविष्य उज्जवल है। ज्ञान व विज्ञान पर आधारित वैदिक मत ही भविष्य में स्थिर रह सकेगा, ऐसा हमें विश्वास है। इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**‘वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून की वनाच्छादित पर्वतीय तपोभूमि में निर्माणाधीन विशाल व भव्य यज्ञशाला का अवलोकन/भ्रमण’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

हम विगत लगभग 45 वर्षों से देहरादून के वैदिक साधन आश्रम तपोवन से एक श्रोता के रूप में जुड़े हुए हैं। इस अवधि में इस संस्था से जुड़े अनेक प्रमुख व्यक्तियों से हमारे निकट संबंध एवं खट्टे मीठे अनुभव भी रहे हैं। यहां हमने स्वामी विद्यानन्द विदेह, महात्मा दयानन्द, महात्मा बलदेव जी, स्वामी सत्यपति जी, स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती, स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, डा. महेश विद्यालंकार, स्वामी सोम्बुद्धानन्द, आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार, आचार्य आर्यनरेश, आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ, डा. जयेन्द्र आचार्य आदि अनेक विद्वानों को सुना है। इस आश्रम के संस्थापक बावा गुरमुख सिंह जी के दो विश्वासपात्र व्यक्तयों श्री धर्मेन्द्र सिंह आर्य और श्री भोलानाथ जी, सहारनपुर के तो हम अत्यन्त निकट रहे हैं। वर्तमान में आश्रम में धर्माचार्य के रूप में विराजमान आचार्य आशीष दर्शनाचार्य जी से भी हमारा परिचय है। उनको आश्रम में, गुरुकुल पौन्धा देहरादून में और टीवी पर भी सुना करते हैं। यहां होने वाले बहुकुण्डीय यज्ञों में भी हमने विगत 40-45 वर्षों में भाग लिया है। इस अवधि में यहां जितने आर्य भजनोपदेशक आयें हैं, उनके भजनों व गीतों का श्रवण भी हमने किया है। सम्प्रति आश्रम का संचालन इसके यशस्वी प्रधान व दानवीर श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी, दिल्ली और यशस्वी महामंत्री इंजीनियर व दानवीर श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी द्वारा पूरी निष्ठा, समर्पण व सक्रियता से किया जा रहा है। इन दोनों आर्य महानुभावों से भी हमारे मधुर व हार्दिक स्नेहपूर्ण सम्बन्ध हैं। इस आश्रम की मासिक पत्रिका पवमान के मुख्य सम्पादक श्री कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री जी को भी हमें सहयोग करने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है। अतः इस आश्रम की प्रगति में हम सहयोग कर पायें या न कर पायें, हमें चिन्ता रहती है कि यह संस्था इसके संस्थापक बावा गुरमुख सिंह और उनके सहयोगी कीर्तिशेष महात्मा आनन्द स्वामी के भावनाओं के अनुरूप खूब प्रगति करें। यहां वर्ष भर साधकों के आने तांता लगा रहे। साधना में सब प्रगति करें और अभ्युदय व निःश्रेयस को प्राप्त हों। यह भी बता दें कि महात्मा आनन्द स्वामी ने समय समय पर यहां अज्ञातवासी होकर साधनायें की हैं। स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती, महात्मा प्रभु आश्रित, महात्मा दयानन्द, स्वामी दिव्यानन्द जी आदि अनेक योग साधकों ने भी यहां रहकर साधना की है।

 फरवरी, 2016 माह में स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी के ब्रह्मत्व में तपोवन आश्रम की वनाच्छादित पवर्तीय, शान्त व निर्जन साधना स्थली तपोभूमि में चतुर्वेद पारायण यज्ञ का सफल आयोजन किया गया था। दिल्ली और देश के अनेक भागों से बड़ी संख्या में पधारे साधक व यज्ञ प्रेमियों ने यहां लगभग तीन सप्ताह रहकर चतुर्वेद पारायण यज्ञ को सफल बनाया था। स्वामी चित्तेश्वरानन्द इन आयोजनों में यज्ञ प्रेमी साधकों को कड़े नियमों में रखते हैं। वह मोबाइल फोन का प्रयोग कम से कम या न के बराबर ही कर पाते हैं। अधिकांश समय उनको मौन रहना पड़ता है। बाहर आ जा नहीं सकते। बहुत साधारण भोजन कर सन्तुष्ट रहना पड़ता है। स्वाध्याय सहित अधिक व लम्बे समय तक ध्यान लगाने का अभ्यास भी करना पड़ता है। तब भी लोग प्रसन्नतापूर्वक इन सभी तपस्याओं को करते हुए पूर्ण श्रद्धा से दोनों समय दीर्घावधि तक यज्ञ करते हैं। इस वर्ष इस आयोजन के समय हम टंकारा ऋषि बोधोत्सव में गये हुए थे। वहां से आकर अन्तिम दिन पूर्णाहुति में सम्मिलित हुए थे। इस अवसर पर हमने जो प्रवचन सुने, यज्ञ को होते हुए देखा तथा यहां के अन्य समाचारों से अपने पाठकों को अवगत कराया था। चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति के समय स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी और यज्ञप्रेमी साधकों ने यहां एक यज्ञशाला के निर्माण की आवश्यकता अनुभव की थी। इसका प्रस्ताव बना जिसमें स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती और आश्रम के मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी ने एक - एक लाख रुपये दान देने की घोषणायें की थी। बाहर से पधारे और कुछ स्थानीय सहायकों ने भी अपनी ओर से यथाशक्ति दान की घोषणा की थी। इसके बाद यज्ञशाला का मानचित्र दिल्ली के एक योग्य वास्तुविद से तैयार कराया गया। विगत अक्तूबर, 2016 माह के आश्रम के शरदुत्सव में इस यज्ञशाला का शिलान्यास स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री जी, श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी आदि के कर कमलों से सम्पन्न किया गया था। अभी मात्र डेढ़ माह ही हुआ है, यह यज्ञशाला लगभग बन कर तैयार है। आज 30 नवम्बर, 2016 को इस निर्माणाधीन यज्ञशाला का लिया गया चित्र आपके अवलोकनार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं। आज लिए चित्रों सहित यज्ञशाला परिसर में उपस्थित होने का हमारा जो अनुभव है, वह चित्र देखकर पाठकों को शायद नहीं हो सकेगा। हम आशा करेंगे की आगामी मई, 2017 के ग्रीष्मोत्सव व अन्य किसी अवसर पर यहां आयोजित किसी वृहत यज्ञ में आप भाग लेकर स्वयं उस आनन्द का अनुभव करें जिसका अनुभव हमने आज किया व भावी आयोजन में होने की आशा है। हम यह भी बता दें कि निर्माणाधीन यज्ञशाला की लम्बाई व चैड़ाई 50 x 50 फीट है। ऊंचाई 25 फीट है। यज्ञशाला में पांच यज्ञकुण्ड बनाये जा रहे हैं। एक मध्य में और चार उत्तर-पूर्व, दक्षिण-पूर्व, पश्चिम-दक्षिण और उत्तर-पश्चिम दिशाओं में होंगे। पूर्व दिशा में विद्वानों के प्रवचनों के लिए एक वेदी वा मंच भी बनाया जा रहा है। यज्ञशाला चारों दिशाओं से खुली हुई है। बीच में कोई बड़ा स्तम्भ आदि नहीं है जिससे श्रोताओं को ब्रह्मा जी, वेदपाठी, प्रवचनकर्ता विद्वान या भजनोपदेशकों को सीधा देखने में कोई असुविधा हो।

 हम यह भी बता दें कि आज हम आश्रम के मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा, पवमान मासिक पत्रिका के सम्पादक वैदिक विद्वान, संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी-उर्दू के जानकार श्री कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री के साथ तपोवन आश्रम से चार किमी. दूर वनाच्छादित पर्वतीय तपोभूमि में भ्रमण व यज्ञशाला का अवलोकन करने गये। मंत्री जी ने बताया कि आश्रम की लगभग 70 वर्ष पहले भूमि की जो रजिस्ट्री कराई गई थी वह 590 बीघा भूमि थी। अब वर्तमान में न्यास के पास मात्र लगभग 125 बीघा भूमि ही है। ऐसा पूर्व के कुछ अधिकारियों के कारण हुआ है। हमने भी मंत्री जी को सम्पत्ति विभाग से खरीदी गई भूमि का नक्शा प्राप्त कर न्यास की भूमि को चिन्हित करने का सुझाव दिया। इस आश्रम के न्यासी श्री महेन्द्र सिंह चैहान भूमि विषयक इस कार्य को देख रहे हैं, उनसे मिल कर भी हम इसकी चर्चा करेंगे। मत्री श्री शर्मा जी ने हमें बताया कि आश्रम व तपोभूमि के चार किमी. की दूरी में वनों का भी बहुत बड़ा भाग आश्रम का है जिसे चिन्हित कराया जाना है। सरकार ने यहां जो सड़क बनाई है उसमें भी आश्रम की भूमि का अधिकांश भाग सम्मिलित है। आश्रम एक गोशाला का संचालन भी करता है जो आश्रम व तपोभूमि के मार्ग में लगभग बीच में स्थित है। इस गोशाला में अच्छी नस्ल की अनेक गायें हैं। आश्रम तपोवन विद्या निकेतन के नाम से एक जूनियर हाईस्कूल का संचालन भी करता है जिसमें लगभग 300 बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इस विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती उषा नेगी जी अध्यापिकाओं की अपनी टीम के साथ मिलकर बच्चों को वेद और आर्यसमाज के बहुत अच्छे संस्कार दे रहीं हैं जिसके हम साक्षी हैं। स्कूल में सन्ध्या एवं हवन भी होता है। अब यह नियमित हुआ करेगा। इसके साथ बच्चों को प्रतिदिन आर्य सिद्धान्तों व महापुरुषों के कार्यों से भी परिचित कराया जायेगा। इसके लिये आश्रम ने एक अनुभवी आर्य विद्वान श्री सूरत राम शर्मा को नियुक्त किया है। स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती उषा नेगी, श्री प्रेमप्रकाश शर्मा और श्री कृष्णकान्त वैदिक जी का एक सामूहिक चित्र भी हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

 हम सभी जानते हैं कि विशाल एवं भव्य यज्ञशाला के निर्माण में अधिकारियों के श्रम सहित प्रभूत धन भी व्यय होता है। यज्ञशाला पर अभी तक लगभग रू. 7.50 लाख की धनराशि व्यय हो चुकी है। अब फर्श का कार्य व यज्ञाशाला के परिसर व परिवेश को स्वच्छ एवं सुन्दर बनाने का कार्य शेष है जो बहुत शीघ्र ही पूरा हो जायेगा। इस कार्य में लगभग 2.50 लाख रूपये व्यय होने का अनुमान है। इस कार्य के लिए आश्रम को दान के रूप में सहयोगी ऋषि भक्तों व यज्ञ प्रेमियों के सहयोग की आवश्यकता है। आप जितना कम व अधिक सहयोग कर सकते हैं, आश्रम को देने का कष्ट करें। इसके लिए आश्रम के मंत्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा से दूरभाष संख्या 09412051586 पर सम्पर्क कर सकते हैं। आश्रम की वेबसाइट [www.vaidicsadanashram88@gmail.com](http://www.vaidicsadanashram88@gmail.com) है। नैट व आनलाइन बैकिंग से सहायता व दान देने के लिए बैंक खाते का नाम - वैदिक साधन आश्रम, बैंक - कैनरा बैंक, क्लॉक टावर ब्रांच, देहरादून, बैंक खाता संख्या - **2162101001530 rFkk** तथा IFSC कोड **CNRB0002162** है। यज्ञ करने में पुण्य होता है यह तो हम सब जानते हैं। यदि आप इस पुण्य कार्य में सहयोग करते हैं तो कुछ न कुछ पुण्य तो आपको इसमें अवश्य होगा। यहां जो यज्ञ हुआ करेगा उसके पुण्य में आप भी भागी हो सकते हैं। अतः उदारता से विचार कर अपनी भावनाओं को क्रियात्मक रूप देने का कष्ट करें। यह हमारा आपसे अनुरोध है। हम आशा करते हैं कि आप आश्रम के आगामी मई, 2017 के ग्रीष्मोत्सव में आकर इस यज्ञशाला में बैठकर यज्ञ का आनन्द लेंगे। इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**